द्वादश खण्ड

दक्षिणेश्वर-मन्दिर में भक्तों के संग श्रीरामकृष्ण

प्रथम परिच्छेद

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर के काली-मन्दिर में भक्त-संग में)

श्रीरामकृष्ण भक्तों के संग आनन्द में बैठे हैं। बाबूराम, छोटे नरेन, पल्टु, हरिपद, मोहिनीमोहन आदि भक्तगण ज़मीन पर बैठे हैं। एक ब्राह्मण युवक दो-तीन दिन से ठाकुर के पास हैं। वे भी बैठे हुए हैं। आज शनिवार है, 25 फाल्गुन, 7 मार्च, 1885 ईसवी, समय अन्दाजन तीन का है। चैत्र कृष्णा सप्तमी।

श्री श्री माँ आजकल नहबत में हैं। वे बीच-बीच में ठाकुरबाड़ी (श्रीरामकृष्ण के कमरे) में आकर रहती हैं— श्रीरामकृष्ण की सेवा के लिए। मोहिनीमोहन के साथ स्त्री और नवीनबाबू की माँ गाड़ी करके आई हैं।

स्त्रियाँ नहबत में जाकर श्री श्री माँ के दर्शन और प्रणाम करके वहाँ पर ही हैं। भक्तों के थोड़ा हट जाने पर ठाकुर को आकर प्रणाम करेंगी। ठाकुर छोटी खाट पर बैठे हैं। वे युवा भक्तों को देख रहे हैं और आनन्द में विभोर हो रहे हैं।

राखाल अब दक्षिणेश्वर में नहीं रहते। कई मास बलराम के साथ वृन्दावन में थे। लौट कर अब घर पर ही हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— राखाल अब पेन्शन खा रहा है। वृन्दावन में रह

कर आने के बाद अब घर में रहता है। घर में स्त्री है। किन्तु अब फिर कहता है, 'हज़ार रुपये महीना देने पर भी नौकरी नहीं करूँगा'।

''यहाँ पर लेटा-लेटा कहता था, 'तुम भी अच्छे नहीं लगते', ऐसी उसकी एक विशेष अवस्था हो गई थी।

''भवनाथ ने विवाह किया है, किन्तु सारी रात स्त्री के संग केवल धर्म-कथा करता है। ईश्वर की बातें लेकर ही दोनों रहते हैं। मैंने कहा, स्त्री के संग थोड़ा आमोद-प्रमोद (आह्लाद) करना, तब क्रोध में तेज़ी से बोला, क्या! हम लोग भी आमोद-आह्लाद लेकर रहेंगे?''

ठाकुर अब नरेन्द्र की बातें कहते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(भक्तों के प्रति)*— किन्तु नरेन्द्र के भीतर जितनी व्याकुलता हुई थी, इसके ऊपर (छोटे नरेन्द्र के भीतर) इतनी नहीं हुई।

(हरिपद के प्रति)— तू गिरीश घोष के घर जाता है?

हरिपद— हमारे घर के पास ही घर है, प्रायः ही जाता हूँ।

श्रीरामकृष्ण— नरेन्द्र जाता है?

हरिपद— हाँ, कभी-कभी देख पाता हूँ।

श्रीरामकृष्ण— गिरीश घोष जो कहता है (अर्थात् अवतार कहता है) उस पर वह (नरेन्द्र) क्या बोलता है?

हरिपद— तर्क में हार गए हैं।

श्रीरामकृष्ण— ना, उस (नरेन्द्र) ने कहा, 'गिरीश घोष का जब इतना विश्वास है, मैं क्यूँ कोई भी बात कहूँ!'

जज अनुकूल मुखोपाध्याय के जमाई के भाई आए हैं।

श्रीरामकृष्ण— तुम नरेन्द्र को जानते हो?

जमाई का भाई— जी, हाँ। नरेन्द्र बुद्धिमान लड़का है!

श्रीरामकृष्ण *(भक्तों के प्रति)*— जब इन्होंने नरेन्द्र की सुख्याति (प्रशंसा) की है, तो ये अच्छे व्यक्ति हैं। उस दिन नरेन्द्र आया था। त्रैलोक्य के साथ उस दिन गाना गाया। किन्तु उस दिन गाना अलोना लगा।

(बाबूराम और 'दुदिक' रखना— ज्ञान-अज्ञान के पार हो जाओ)

ठाकुर बाबूराम की ओर देखकर बातें कर रहे हैं। मास्टर जिस स्कूल में पढ़ाते हैं, बाबूराम उस स्कूल में एन्ट्रेंस क्लास (दसवीं) में पढ़ते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(बाबूराम के प्रति)*— तेरी किताबें कहाँ हैं? पढ़ाई-लिखाई नहीं करेगा?

(मास्टर के प्रति)— वह 'दुदिक' रखना चाहता है।

"बड़ा कठिन पथ है, उनको ज़रा-सा जान लेने से क्या होगा? वशिष्ठ ऋषि, उन्हें ही पुत्रशोक हुआ! लक्ष्मण ने यह देखकर अवाक् होकर राम से पूछा। राम बोले— भाई, इसमें फिर आश्चर्य ही क्या? जिसे ज्ञान है, उसे अज्ञान भी है। भाई, तुम ज्ञान-अज्ञान के पार होओ। पैर में काँटा चुभ जाने पर और एक काँटा खोज कर लाना चाहिए, उसी काँटे के द्वारा प्रथम काँटा निकालना चाहिए, फिर दोनों काँटों को ही फेंक देना चाहिए। इसीलिए तो अज्ञान-काँटे को हटाने के लिए ज्ञान-काँटे को जुटाना चाहिए। फिर ज्ञान-अज्ञान के पार जाना चाहिए।"

बाबूराम *(सहास्य)*— मैं वही तो चाहता हूँ।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— ओ रे, 'दुदिक' रखने से क्या वैसा होता है? वह यदि चाहता ही है तो फिर चला आ! (ता जदि चास् तोबे चले आय!)

बाबूराम *(सहास्य)*— आप ले आइए!

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— राखाल था, वह और एक बात थी; उसके पिता का मत था। इन लोगों के रहने से हंगामा हो जाएगा।

(बाबूराम के प्रति)— तू दुर्बल है। तेरा साहस कम है! देख ना, छोटा नरेन कैसे कहता है, मैं एकदम ही आकर रहूँगा।

अब ठाकुर लड़के-भक्तों के बीच आकर ज़मीन पर चटाई पर बैठ गए हैं। मास्टर उनके पास बैठे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर से)*— मैं कामिनी-काञ्चन-त्यागी खोज रहा हूँ। सोचता हूँ, शायद यह रहेगा! सब ही एक न एक हुज्जत (बहाना) लगाते हैं।

''एक भूत संगी खोज रहा था। शनि-मंगलवार को अपघात मृत्यु होने से भूत होता है। जभी वह भूत, जब (ज्योंहि) देखता है कि कोई छत से गिर गया है, या चोट से मूर्छित होकर गिर गया है, झट दौड़ कर जाता— मन में यही सोचता कि इसकी अपघात मृत्यु हुई है, अब भूत बन जाएगा, और मेरा संगी होगा। किन्तु उसका ऐसा भाग्य कि देखता, सब साले बच उठते! फिर संगी नहीं मिला।

''देख ना, राखाल 'स्त्री-स्त्री' करता है। कहता है मेरी स्त्री का क्या होगा? नरेन्द्र की छाती पर हाथ रखने से वह बेहोश हो गया था। तब कहने लगा, अरे, तुमने मुझे क्या कर दिया जी! मेरे बाप-माँ तो हैं जी!

''मुझे उन्होंने इस अवस्था में क्यों रखा हुआ है? चैतन्यदेव ने संन्यास ले लिया। कारण, सब प्रणाम करेंगे। जो एक बार भी नमस्कार करेगा उसका उद्धार हो जाएगा।''

ठाकुर के लिए मोहिनीमोहन छबड़ी में 'सन्देश' लाए हैं।

श्रीरामकृष्ण— यह 'सन्देश' किसके हैं?

बाबूराम ने मोहिनी की ओर इशारा कर दिया।

ठाकुर ने प्रणव (ॐ) उच्चारण करके सन्देश स्पर्श करके किञ्चित् ग्रहण करके प्रसाद कर दिया। इसके पश्चात् ये ही सन्देश लेकर भक्तों को देते हैं। कैसा आश्चर्य! छोटे नरेन को तथा और भी दो-एक लड़के भक्तों को अपने-आप खिला रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— इसके एक मायने हैं। नारायण का शुद्धात्माओं के भीतर अधिक प्रकाश है। उस देश में (कामारपुकुर में) जब जाया करता था, इसी प्रकार लड़कों को, किसी-किसी के मुख में, खाना दे दिया करता था। चिने शांखारी कहता— 'ये हमें क्यों नहीं खिलाते?'— कैसे दूँगा मुँह में? कोई भाज-मेगो है, कोई अमुक-मेगो!* कौन खिलाए उन्हें?

---

* कोई भावज के साथ है, कोई अमुक स्त्री के साथ।

द्वितीय परिच्छेद

(समाधिमन्दिर में भक्तों के सम्बन्ध में महावाक्य)

ठाकुर श्रीरामकृष्ण शुद्धात्मा भक्तों को पाकर आनन्द में तैर रहे हैं और छोटी खाट पर बैठे-बैठे उनको स्त्री कीर्त्तनियों के ढंग दिखा कर हँस रहे हैं। कीर्त्तनी सजी-संवरी अपने सम्प्रदाय (मण्डली) के साथ गाना गा रही है। कीर्त्तनी खड़ी होकर, हाथ में रंगीन रूमाल है, बीच-बीच में ढोंग करके (बनावटी) खाँसती है और नथ उठाकर थूकती है। और फिर किसी विशिष्ट व्यक्ति के आ जाने पर, गाना गाती-गाती उसकी अभ्यर्थना करती है और कहती है 'आइए'! और फिर बीच-बीच में हाथ के ऊपर से कपड़ा हटाकर ताबीज, अनन्त और बाउटि (बाजू का गहना) इत्यादि अलंकार दिखाती है।

अभिनय देखते हुए सभी भक्तगण हो-हो करके हँसने लगे। पल्टु हँसते हुए लोटपोट हो रहे हैं। ठाकुर पल्टु की ओर ताकते हुए मास्टर से कह रहे हैं— ''बालक है ना, तभी हँस-हँसकर लोटपोट हो रहा है।''

श्रीरामकृष्ण *(पल्टु के प्रति, सहास्य)*— अपने बाप को ये सब बातें मत बताना। जो भी ज़रा-सा (मेरे प्रति) आकर्षण है, वह भी चला जाएगा। वह तो पहले ही इंग्लिशमैन है।

(आह्निक* जप और गंगास्नान के समय बातें)

(भक्तों के प्रति)— ''कितनी ही नित्यकर्म करने के समय ही सारे जगत की बातें करती हैं, किन्तु मुँह से नहीं बोलतीं। इसीलिए होंठ बन्द किए-किए ही इशारा करती रहती हैं— यह ले आओ, वह ले जाओ, हूँ, उहूँ, इत्यादि सब करती हैं। *(हास्य)*।

''और फिर कोई माला-जप करती है; उसमें ही मछली का भाव-ताव कर लेती है! जप करते-करते या तो उसे उँगली से दिखा देती है— वह मछली! जितना हिसाब, सब उसी समय! *(सबका हास्य)*।

---

* दैनिक

''कोई गंगास्नान करने आई हैं। उस समय भगवान का क्या चिन्तन करेंगी, गप्पें लगाने बैठ गईं! जितनी सब दुनिया की बातें— 'तेरे बेटे का विवाह हो गया, क्या-क्या गहना दिया?' 'अमुक को बड़ी बीमारी है,' 'अमुक ससुराल से आई है कि नहीं,' 'अमुक लड़की देखने आई थी, वह लेना-देना, आमोद-प्रमोद खूब करेगी,' 'हरीश मेरा बड़ा ही दुलारा है, वह मुझे छोड़कर एक क्षण भी नहीं रह सकता,' 'इतने दिन आ नहीं सकी, बहिन, अमुक की लड़की के विवाह की बातचीत पक्की करनी थी, बड़ी व्यस्त (काम में रुझी हुई) थी।'

''देखो ना, कहाँ तो गंगास्नान करने के लिए आई हैं! और सब सांसारिक बातें करती हैं।''

ठाकुर नरेन को एक दृष्टि से देख रहे हैं। देखते-देखते समाधिस्थ हो गए! शुद्धात्मा भक्त के भीतर ठाकुर क्या नारायण-दर्शन कर रहे हैं?

भक्तगण एक दृष्टि से वही समाधि-चित्र देख रहे हैं। इतनी हँसी-खुशी हो रही थी! अब सब ही नि:शब्द, कमरे में जैसे कोई भी व्यक्ति नहीं। ठाकुर का शरीर निस्पन्द, चक्षु स्थिर, हाथ जोड़कर चित्रार्पित की भाँति बैठे हुए हैं!

कुछ समय बाद समाधि भंग हुई। ठाकुर की वायु स्थिर हो गई थी, अब दीर्घ निश्वास-त्याग किया। क्रमश: बाहर जगत में मन आ रहा है। भक्तों की ओर देख रहे हैं।

अभी भी भावस्थ हुए-हुए हैं। अब प्रत्येक भक्त को सम्बोधन करके 'किसका क्या होगा और किसकी किस प्रकार की अवस्था है'— कुछ-कुछ बतला रहे हैं।

(छोटे नरेन के प्रति)— ''तुम्हें देखने के लिए व्याकुल हो गया था। तेरा होगा। तू एक-एक बार आइयो— अच्छा, तू क्या सोचता है?— ज्ञान, या भक्ति?''

छोटे नरेन— केवल भक्ति।

श्रीरामकृष्ण— बिना जाने भक्ति किसकी करेगा?

(मास्टर को दिखलाकर, सहास्य) इनको यदि नहीं जानता तो कैसे इनकी भक्ति करेगा?

(मास्टर के प्रति)— किन्तु शुद्धात्मा ने जब कहा है, 'केवल भक्ति चाहता हूँ'— इसका अर्थ अवश्य है।

''अपने-आप भक्ति का आना संस्कार के बिना रहे नहीं होता। यही तो है प्रेमाभक्ति का विशेष लक्षण। ज्ञानभक्ति तो विचार करके भक्ति है।

(छोटे नरेन के प्रति)— ''देखूँ, तेरा शरीर देखूँ। कुरता उतार, देखूँ। छाती की सुन्दर बढ़िया चौड़ाई है, तो होगा। बीच-बीच में आइयो।''

ठाकुर अब भी भावस्थ हैं। और-और भक्तों को, एक-एक जन को सस्नेह सम्बोधन करके फिर कह रहे हैं।

(पल्टु के प्रति)— तुझे क्यों नहीं खींचता? अन्त में एक हंगामा हो जाएगा!

(मोहिनीमोहन के प्रति)— तुम तो हो ही! थोड़ा-सा बाकी है, वह हो जाने पर कर्म-काज, गृहस्थ (संसार)— कुछ नहीं रहता। सब जाना क्या भला है?

यह बोलकर उनकी ओर एकटक सस्नेह ताकते रहे, जैसे उनके हृदय के अन्तरतम प्रदेश का समस्त भाव देख रहे हैं! मोहिनीमोहन क्या सोच रहे थे, 'ईश्वर के लिए सब चला जाना ही अच्छा है?' कुछ देर बाद ठाकुर फिर और कहते हैं— भागवत पण्डित को केवल एक पाश (बन्धन) देकर ईश्वर रख देते हैं, वैसा न हो तो भागवत कौन सुनाएगा?— रख देते हैं लोकशिक्षा के लिए। माँ ने उसी के लिए संसार में रखा हुआ है।

अब ब्राह्मण युवक को सम्बोधन करके कह रहे हैं।

(ज्ञानयोग और भक्तियोग— ब्रह्मज्ञानी की अवस्था और 'जीवन्मुक्त')

श्रीरामकृष्ण *(युवक के प्रति)*— तुम ज्ञान-चर्चा छोड़ो, भक्ति लो। भक्ति ही सार है। आज तुम्हारे क्या तीन दिन हो गए?

ब्राह्मण युवक *(हाथ जोड़ कर)*— जी, हाँ।

श्रीरामकृष्ण— विश्वास करो। निर्भर करो। वैसा होने पर स्वयं कुछ नहीं करना पड़ेगा। माँ काली ही सब करेंगी।

''ज्ञान सदर महल तक जा सकता है। भक्ति अन्दर महल में जाती है। शुद्धात्मा निर्लिप्त है। विद्या, अविद्या उनके भीतर दोनों ही हैं। वे निर्लिप्त हैं। वायु में कभी सुगन्ध, कभी दुर्गन्ध रहती है, किन्तु वायु निर्लिप्त है। व्यासदेव जमुना पार जा रहे हैं, गोपियाँ भी वहाँ पर पहुँच गईं। वे भी पार जाएँगी, दही, दूध, मक्खन बेचने जा रही हैं। किन्तु नौका नहीं है, कैसे पार जाएँ! सब चिन्ता करने लगीं।

''इसी समय व्यासदेव बोले, मुझे बड़ी भूख लगी है। तब गोपियों ने उनको दूध, मलाई, मक्खन— सब बहुत-सा खिलाया। व्यासदेव प्राय: समस्त ही खा गए।

''तब व्यासदेव जमुना को सम्बोधन करके बोले— 'हे जमुने! मैंने यदि कुछ भी नहीं खाया है, तो फिर तुम्हारा जल दो भाग हो जाएगा और बीच के रास्ते से हम चले जाएँगे।' ठीक वैसा ही हो गया! जमुना दो भाग हो गई, बीच में उस पार जाने का पथ हो गया। उसी पथ द्वारा व्यासदेव और गोपियाँ, सब पार हो गए!

''मैंने 'खाया नहीं'— इसका अर्थ यही है कि मैं वही शुद्धात्मा हूँ। शुद्धात्मा निर्लिप्त है— प्रकृति के पार है। उसकी भूख-प्यास नहीं। जन्म-मृत्यु नहीं। अजर, अमर, सुमेरुवत्!

''जिसका ऐसा ब्रह्मज्ञान हो गया है, वह है जीवन्मुक्त! वह ठीक-ठीक समझ सकता है कि आत्मा अलग है और देह अलग है।

''भगवान का दर्शन करने पर देहात्मबुद्धि फिर और नहीं रहती। दोनों अलग। जैसे नारियल का जल सूख जाने पर गोला अलग और खोल अलग हो जाता है। वही आत्मा जैसे देह के भीतर हिलती-डुलती रहती है। वैसे ही विषयबुद्धि रूप जल के सूख जाने पर आत्मज्ञान होता है। आत्मा अलग है और देह अलग है— यह बोध हो जाता है। कच्ची सुपारी व कच्चे बादाम छाल से अलग नहीं किए जाते।

''किन्तु पक्की अवस्था में सुपारी व बादाम अलग और छाल अलग हो जाती है। पक्की अवस्था में रस सूख जाता है। ब्रह्मज्ञान होने पर विषयरस सूख जाता है।

''किन्तु वह ज्ञान बड़ा कठिन है। कहने से ही ब्रह्मज्ञान नहीं हो जाता! कोई ज्ञान का भान (धोखा) करता है। *(सहास्य)* एक जन बहुत मिथ्या बात कहता था, और इधर कहता— मुझे ब्रह्मज्ञान हो गया है। किसी व्यक्ति के तिरस्कार करने पर उसने कहा— 'क्यों? जगत तो स्वप्नवत् है, सब ही यदि मिथ्या है तो सत्य बात ही क्या ठीक है? मिथ्या भी मिथ्या, सत्य भी फिर मिथ्या!'' *(सबका हास्य)*।

तृतीय परिच्छेद

('धर्मसंस्थापनाय सम्भवामि युगे युगे'— गुह्य कथा)

श्रीरामकृष्ण भक्तों के संग धरती पर चटाई (मादुर) पर बैठे हैं। सहास्यवदन हैं। भक्तों से कहते हैं, मेरे पाँव तनिक हाथ से सहला दो तो! भक्तगण चरण-सेवा करते हैं। *(मास्टर के प्रति, सहास्य)* ''इस (पदसेवा) के बहुत मायने हैं।''

और फिर अपने हृदय पर हाथ रखकर कह रहे हैं, ''इसके भीतर यदि कुछ है, (पदसेवा करने से) अज्ञान-अविद्या एकदम चले जाते हैं।''

हठात् श्रीरामकृष्ण गम्भीर हो गए, मानो क्या गुह्य बात कहेंगे!

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— यहाँ पर अपर लोग कोई नहीं हैं। उस दिन हरीश पास था, देखा था— गिलाफ (यह देह) छोड़कर सच्चिदानन्द बाहर आ गया। आकर कहने लगा, मैं युग-युग में अवतार! तब सोचा था, शायद मन के ख्याल से वैसी बात बोल रहा हूँ। तत्पश्चात् चुप रह कर देखा था— तब देखा अपने-आप कह रहा है, शक्ति की आराधना चैतन्य ने भी की थी।

भक्तगण सब ही अवाक् होकर सुन रहे हैं। कोई-कोई विचार कर रहे

हैं— सच्चिदानन्द भगवान क्या श्रीरामकृष्ण रूप धारण करके हमारे पास बैठे हुए हैं? भगवान क्या फिर और अवतीर्ण हुए हैं?

श्रीरामकृष्ण बातें कर रहे हैं। मास्टर को सम्बोधन करके फिर और कह रहे हैं— ''देखा था, पूर्ण आविर्भाव। किन्तु सत्त्वगुण का ऐश्वर्य।''

भक्तगण सब अवाक् होकर ये सब बातें सुन रहे हैं।

(योगमाया, आद्याशक्ति और अवतार-लीला)

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— अभी-अभी माँ से कहा था, और बक (बोल) नहीं सकता। और कहा था, 'माँ जैसे एक बार छू देने से व्यक्ति को चैतन्य हो जाए!' योगमाया की ऐसी महिमा! वे जादू कर दे सकती हैं। वृन्दावन-लीला में योगमाया ने जादू कर दिया था। उनके ही बल से सुबल ने कृष्ण के संग श्रीमती का मेल करवा दिया था। योगमाया— जो आद्याशक्ति, उनकी एक आकर्षणी शक्ति है। मैंने उसी शक्ति का आरोप किया था।

''अच्छा, जो आते हैं, उनका कुछ-कुछ हो रहा है?''

मास्टर— जी हाँ, होने के अतिरिक्त क्या? (होता ही है, निश्चय)।

श्रीरामकृष्ण— कैसे जाना?

मास्टर *(सहास्य)*— सब ही कहते हैं कि उनके पास जो जाते हैं, वे लौटते नहीं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— एक कोला बैग (बड़ा मेंढक) हेले साँप (विष-रहित साँप) के पल्ले पड़ गया था। वह उसको निगल भी नहीं सकता था, छोड़ भी नहीं सकता था। फिर बड़े मेंढक को भी यन्त्रणा! वह लगातार चीत्कार कर रहा था। ढांड़ा (विष-रहित साँप) को भी यन्त्रणा थी! यदि मेंढक गोखुरा साँप (copru, a poisonous snake) के पल्ले पड़ता तब फिर तो दो-एक पुकार में ही शान्ति हो जाती! *(सबका हास्य)*।

(छोकरे भक्तों के प्रति)— ''तुम लोग त्रैलोक्य की वह पुस्तक पढ़ना— 'भक्ति-चैतन्यचन्द्रिका'। उससे एक माँग कर ले लो ना! चैतन्यदेव की सुन्दर बातें हैं।''

एक जन भक्त— वे दे देंगे क्या?

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— क्यों, कांकुड़ (green melon)-खेत में यदि बहुत से कांकुड़ (हरे तरबूज) हों तो फिर मालिक 2-3 बाँट ही सकता है! *(सबका हास्य)*। ऐसा भी क्या, नहीं देगा! क्या कहता है?

श्रीरामकृष्ण *(पल्टु के प्रति)*— आइयो यहाँ पर, एक बार।

पल्टु— सुविधा होने पर आऊँगा।

श्रीरामकृष्ण— कलकत्ता में जहाँ जाऊँगा, वहाँ पर आना?

पल्टु— आऊँगा, चेष्टा करूँगा।

श्रीरामकृष्ण— यह है पटवारी (बुद्धि)!

पल्टु— 'चेष्टा करूँगा' यदि न कहूँ तो फिर झूठी बात हो जाएगी।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— इनकी बात झूठ नहीं लेता, ये स्वाधीन नहीं हैं।

ठाकुर हरिपद के साथ बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(हरिपद के प्रति)*— महेन्द्र मुखुज्ये क्यों नहीं आता?

हरिपद— ठीक नहीं बता सकता।

मास्टर *(सहास्य)*— वे ज्ञान-योग करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— ना, उस दिन 'प्रह्लाद-चरित्र' देखने के लिए गाड़ी भेजने के लिए कहा था। किन्तु भेजी नहीं थी। लगता है इसीलिए नहीं आता।

मास्टर— एक दिन महिम चक्रवर्ती को मिला था और बातचीत हुई थी। लगता है वहीं पर आते-जाते हैं।

श्रीरामकृष्ण— क्यों, महिमा तो भक्ति की बातें भी करता है। वह तो उन्हें खूब कहता है, 'आराधितो यदि हरिस्तपसा ततः किम्।'

मास्टर *(सहास्य)*— वह आप बुलवाते हैं, तभी बोलता है!

श्रीयुक्त गिरीश घोष ठाकुर के पास नए आने-जाने लगे हैं। आजकल वे सर्वदा ठाकुर की बातें ही लेकर रहते हैं।

हरिपद— गिरीश घोष आजकल बहुत प्रकार से देखते हैं। यहाँ से जाने के समय से सर्वदा ईश्वर के भाव में रहते हैं। कितना कुछ देखते हैं!

श्रीरामकृष्ण— वह हो सकता है, गंगा के निकट जाने पर बहुत-सी चीजें दिखाई देती हैं, नौका, जहाज— कितना कुछ!

हरिपद— गिरीश घोष कहते हैं, 'अब केवल कर्म लेकर रहूँगा। प्रात: घड़ी देखकर दवात-कलम लेकर बैठूँगा और सारा दिन वही (पुस्तक लिखना) करूँगा।' ऐसा कहते तो हैं किन्तु कर नहीं सकते। हमारे जाते ही केवल यहाँ की ही बातें! आपने नरेन्द्र को भेजने को कहा था। गिरीश बाबू कहने लगे, 'नरेन्द्र को गाड़ी कर दूँगा।'

पाँच बज गए हैं। छोटे नरेन्द्र घर जा रहे हैं। ठाकुर उत्तर-पूर्व के लम्बे बरामदे में खड़े होकर एकान्त में उनको तरह-तरह के उपदेश दे रहे हैं। कुछ देर बाद उन्होंने प्रणाम करके विदा ग्रहण की। अन्य भक्तों में से भी बहुतों ने विदा ग्रहण की।

श्रीरामकृष्ण छोटी खाट पर बैठकर मोहिनी के साथ बातें कर रहे हैं। मोहिनी की स्त्री पुत्रशोक के पश्चात् पागल-जैसी हो गई है। कभी हँसती हैं, कभी रोती हैं, किन्तु ठाकुर के पास दक्षिणेश्वर आकर भाव शान्त हो जाता है।

श्रीरामकृष्ण— तुम्हारी स्त्री अब कैसी है?

मोहिनी— यहाँ आने से ही शान्त हो जाती हैं, वहाँ पर बीच-बीच में बड़ा हंगामा मचाती हैं। उस दिन मरने गई थी।

ठाकुर यह सुनकर कुछ समय तक चिन्तित हुए रहे। मोहिनी विनीत भाव से कहते हैं, "आप दो-एक बातें कह दें।"

श्रीरामकृष्ण— पकाने (रसोई करने) ना दिओ। उससे सिर और भी गरम हो जाता है। और, लोगों के साथ रखोगे।

चतुर्थ परिच्छेद

(श्रीरामकृष्ण की अद्‌भुत संन्यास की अवस्था— तारक-संवाद)

सन्ध्या हो गई है। ठाकुर-मन्दिर में आरती की तैयारी हो रही है। श्रीरामकृष्ण के कमरे में प्रदीप जलाना और धूना देना हो गया है। ठाकुर छोटी खाट पर बैठे जगन्माता को प्रणाम करके सुस्वर में नाम कर रहे हैं। कमरे में और कोई नहीं है। केवल मास्टर बैठे हैं।

ठाकुर उठे। मास्टर भी खड़े हो गए। ठाकुर ने कमरे का पश्चिम का और उत्तर का दरवाजा दिखाकर मास्टर से कहा, ''उन्हें (दरवाजों को) बन्द कर दो।'' मास्टर द्वार बन्द करके बरामदे में ठाकुर के पास आ कर खड़े हो गए।

ठाकुर कहते हैं ''एक बार काली-घर में जाऊँगा।'' यह कहकर मास्टर का हाथ पकड़ कर और उनके ऊपर भार देकर काली-मन्दिर के सम्मुख चबूतरे पर जा उपस्थित हुए और उसी स्थान पर बैठ गए। बैठने से पहले कहते हैं, ''तुम वरन् (बल्कि) उसको बुला दो।'' मास्टर ने बाबूराम को बुला दिया।

ठाकुर माँ काली के दर्शन करके बृहत् आँगन के मध्य से अपने कमरे में लौट रहे हैं। मुख में 'माँ! माँ! राज राजेश्वरी!' है।

कमरे में आकर उसी छोटी खाट पर बैठ गए।

ठाकुर की एक विशेष अद्‌भुत् अवस्था हुई है। किसी भी धातु-द्रव्य में हाथ नहीं दे सकते। कहते थे, 'माँ, लगता है, ऐश्वर्य के व्यापार को मन से एकदम हटा रही हैं।' अब केले के पत्ते पर भोजन करते हैं, मिट्टी के बर्तन में जल पीते हैं। गाडू* छू नहीं सकते, इसीलिए भक्तों को मिट्टी की हण्डी लाने को कहा था। गाडू को या थाल को हाथ लगाते ही हाथ झन्-झन्, कन्-कन् करने लगता है, जैसे सिंगि मछली का काँटा बीन्धता है।

प्रसन्न कई बर्तन (भाण्डे) लाया था, किन्तु बहुत छोटे। ठाकुर हँस

* गाडू = शौच का लोटा।

कर कहते हैं, ''भाण्डे तो बहुत छोटे हैं। किन्तु लड़का बढ़िया है। मेरे कहने पर मेरे सामने नंगा होकर खड़ा हो गया। कैसा बालक!''

('भक्त और कामिनी'— 'साधु सावधान')

बेलघर के तारक एक मित्र के साथ आए हैं।

ठाकुर छोटी खाट पर बैठे हुए हैं। कमरे में प्रदीप जल रहा है। मास्टर और दो-एक भक्त भी बैठे हैं।

तारक ने विवाह किया हुआ है। बाप-माँ ठाकुर के पास आने नहीं देते। कलकत्ता में बड़ाबाजार के निकट निवास-स्थान है। वहाँ पर ही आजकल तारक प्राय: रहते हैं। तारक को ठाकुर बड़ा प्यार करते हैं। संगी लड़का कुछ तमोगुणी है। धर्म-विषय में और ठाकुर के सम्बन्ध में थोड़ा व्यंग्य-भाव है। तारक की वयस् अन्दाजन (लगभग) सत्ताइस वर्ष है। तारक ने आकर ठाकुर को भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया।

श्रीरामकृष्ण *(तारक के मित्र के प्रति)*—एक बार देवालय आदि समस्त देख आओ ना!

बन्धु— वह समस्त देखा हुआ है।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, तारक जो यहाँ पर आता है, वह क्या खराब बात है?

बन्धु— वह तो आप जानते हैं।

श्रीरामकृष्ण— ये (मास्टर) हेडमास्टर हैं।

बन्धु— ओह!

ठाकुर तारक से कुशल-प्रश्न करते हैं और उनको सम्बोधन करके बहुत-सी बातें कर रहे हैं। तारक अनेक कथावार्ता के उपरान्त विदा ग्रहण करने के लिए उद्यत हुए। ठाकुर उनको नाना विषयों में सावधान कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(तारक के प्रति)*— साधु, सावधान! कामिनी-काञ्चन से सावधान! नारियों की माया में एक बार डूब जाने पर फिर उठकर निकलना नहीं हो पाता। विशालाक्षी नदी का भँवर है, जो एक बार गिर गया वह फिर उठ नहीं सकता! और यहाँ पर एक-एक बार आएगा।

तारक— घर से आने नहीं देते।

कोई भक्त— यदि किसी की माँ कहे तू दक्षिणेश्वर मत जाना? यदि सौगन्ध खिला दें और कहें, यदि जाएगा तो मेरा खून पिएगा?

(केवल ईश्वर के लिए गुरुवाक्य-उल्लंघन)

श्रीरामकृष्ण— जो माँ वैसी बात कहती है, वह माँ नहीं है। वह है अविद्यारूपिणी। उस माँ की बात न सुनने में कोई दोष नहीं है। वह माँ ईश्वर-लाभ के पथ में विघ्न डालती है। ईश्वर के लिए गुरुजनों का वाक्य उल्लंघन करने में दोष नहीं है। भरत ने राम के लिए कैकेयी की बात नहीं सुनी। गोपियों ने कृष्ण-दर्शन के लिए पतियों का मना करना नहीं सुना। प्रह्लाद ने ईश्वर के लिए बाप की बात नहीं सुनी। बलि (राजा) ने भगवान की प्रीति के लिए गुरु शुक्राचार्य की बात नहीं सुनी। विभीषण ने राम को पाने के लिए बड़े भाई रावण की बात नहीं सुनी।

''किन्तु ईश्वर के पथ पर न जाना, यह बात छोड़कर और सब बातें सुनेगा! देखूँ, तेरा हाथ देखूँ!''

यह कहकर ठाकुर तारक का हाथ कितना भारी है— मानो देख रहे हैं। कुछ देर पश्चात् कहते हैं, ''थोड़ी-सी आड़ (रुकावट) है— किन्तु वह उतनी-सी भी चली जाएगी। उनके पास प्रार्थना करियो, और यहाँ पर एक-एक बार आइयो— वह ज़रा-सी भी चली जाएगी! कलकत्ता का बऊबाजार का घर तूने किया है?''

तारक— जी नहीं, उन्होंने किया है।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— उन्होंने किया है या तूने किया है? बाघ के भय से?

ठाकुर कामिनी को बाघ कह रहे हैं।

ठाकुर छोटी खाट पर लेटे हुए हैं, जैसे तारक के लिए सोच रहे हैं। हठात् मास्टर से कह रहे हैं— इनके लिए मैं इतना व्याकुल क्यों हूँ?

मास्टर चुप हैं— मानो क्या उत्तर दें, सोच रहे हैं। ठाकुर फिर

दोबारा जिज्ञासा करते हैं, और कह रहे हैं, ''बोल ना!''

इधर मोहनीमोहन की स्त्री ठाकुर के कमरे में आकर प्रणाम करके एक ओर बैठ गई।

ठाकुर तारक के संगी की बात मास्टर से कह रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— तारक क्यों उसको साथ लाया?

मास्टर— शायद रास्ते का संगी है। बड़ा लम्बा रास्ता है ना! तभी किसी को संग ले आया।

इस बात के बीच हठात् मोहिनी की स्त्री को सम्बोधन करके कहते हैं, ''अपघात मृत्यु होने पर प्रेतनी होती है। सावधान! मन को समझाएगी! इतना सुनकर, देखकर शेष काल में क्या यही होना है!''

मोहिनी अब विदा ग्रहण कर रहे हैं। ठाकुर को भूमिष्ठ होकर प्रणाम कर रहे हैं। स्त्री भी ठाकुर को प्रणाम कर रही है। ठाकुर अपने कमरे में उत्तर की ओर दरवाजे के निकट खड़े हुए हैं। स्त्री सिर पर धोती ढाँककर ठाकुर से आहिस्ते-आहिस्ते कुछ कह रही है।

श्रीरामकृष्ण— यहाँ पर रहेगी?

स्त्री— आकर कुछ दिन रहूँगी। नहबत में माँ हैं, उनके पास।

श्रीरामकृष्ण— ता बेश (यह तो अच्छी बात है)। किन्तु तुम जो कहती हो— मरने की बात! जभी भय लगता है। और फिर पास ही गंगा है!